



श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाविहार II-8173

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ३ ॥ कायविशोधने स्वाहा ॥ ॥ सायाने नमः ॥ पूजा रुद्रसंस्तवन
हाया ॥ ॐ नमो ॥ सर्वविद्या नूता नये ॥ ॥ ॐ नमो रुद्रगवने
पूष्य केतुना जायतथा गताया रुद्रके संमस्कृताया तथथा ॥ ॐ पूष्य
महापूष्य सपूष्य पूष्य संरुद्र पूष्या रुद्र पूष्यावकि नरुद्र स्वाहा ॥ ॥ पूजा

॥ ॥ स्नानत्राशावायवा ॥ सर्वपापानपनयकृंश ॥ ॥ स्नानरुडीस्वशक्तिने ॥ ॥
 ॐ मसिधनिवजिधीमहापातिसलेनक्रमांसर्वसत्त्वानां कृं कृं कृं कृं स्वाहा ॥
 ॥ ॥ स्नानथमनं कृया ॥ ॐ वज्रसिन्धुनखनिनखरुखने स्वाहा ॥ ॥ सिद्ध वम
 धुनसतियकं थमनंतियवा ॥ ॐ वज्रादकं कृं वज्रवमय कृं वज्ररूपममन
 धसर्वमथागतत्रिधिरुनात्रिधिरुडन स्वाहा ॥ ॥ अकिं स्वां वयका

नय १
याङामधुलसधियागम्या ॥ ॥ उं दानं मयं मं वृनाथं वसहितं सिलं व
सिनं वसार्यं नं कानि द्दुं पिपि निका नपनयं विर्य क्रिया थापनं ध्या
नं गक्रनं मे कवित्कालनं प्रह्ला लाल धेजा वाः ता पात्र मिताषदिव द
रति कृत्वा म्नि मं शुल रुवडुक न कर्वर्शु सर्व नो गविनि मकूट सूत्र म
नूज विस्तिष्ठ वडवज्जर्दि फेका नि धन कन कसमृध्व न जायते नाज वं

ससूरातवलगृहंरस्मिनकायकंमानकृत्वावजुनविस्त्रुनविस्त्रुवर्धु
 लक्ष्मिंस्वाहा॥ ॥मधुनसगोत्राङ्गाय॥ ॥उं वडाकविमलेस्वाहा॥ ॥
 खानलाहामयादुःशानमयाः पूयकाङ्गिकलङ्गाय॥ ॥उं वजुसत्त्वसर्वः
 विद्यानूसावयद्स्वाहा॥ ॥मधुनउयकाङ्गावलिस्मया॥ ॥उं हमा
 मध्वमेववेनम॥ ॥मधुनयादयस्स्वानवीया॥ ॥उं श्रीमध्वमेववेनः

मा॥ ॥दयूसङ्गा॥ ॥उं संमुजमेववेनम॥ ॥दयूसःखडा॥ ॥
 यंपूर्वविद्यहायनम॥ ॥हडा॥ ॥वं उं वृद्धिपायनम॥ ॥दयादिगा॥
 नरूपलम्बजवलियायनम॥ ॥थडा॥ ॥वं उं नरुनूत्यनम॥ ॥
 ऊडा॥ ॥याउपदिपायनम॥ ॥खडा॥ ॥उं उपदिपायनम॥
 ॥ ॥खडाथयूकं॥ ॥याउपदिपायनम॥ ॥ऊडाथयूकं॥ ॥उं उ

पदियायनम॥ ॥ ऊडीकथकं॥ ॥ उगऊवलायनम॥ ॥ ऊडीनयि
 ना॥ ॥ नपूखवलायनम॥ ॥ दयादिगा॥ ॥ लरुखवलायनम॥ ॥
 थडीनदिगा॥ ॥ वस्त्रिनलायनम॥ ॥ ऊडीसदिगा॥ ॥ याखगवलायनम॥
 खडीकथकं॥ ॥ नावकुनलायनम॥ ॥ खडीथथकं॥ ॥ लामधिनलायनम॥ ॥
 ऊडीथथकं॥ ॥ आसनवनिधनेयनम॥ ॥ ऊडीकथकं॥ ॥ वंद्यायनम॥ ॥

दयावाम॥ ॥ सुसूर्यायनम॥ ॥ ऊडीयावामं॥ ॥ आधीवगुनूवनमः॥ ॥ हा
 नंदथसंकय॥ ॥ वज्रगल्हस्वाहा॥ ॥ विकसिक्त॥ ॥ वज्रपूषिस्वाहा॥ ॥ खानतय
 ॥ ॥ वज्रधूषस्वाहा॥ ॥ धूपयने॥ ॥ वज्रदियस्वाहा॥ ॥ पनविया॥ ॥ वज्रनेविश
 स्वाहा॥ ॥ नेविशक्या॥ ॥ वज्राकायस्वाहा॥ ॥ किम्वलतिने॥ ॥ वज्रनलंमयं
 मरुमरुसिंघप्रसहितं नानाबलं समाकिर्त्तददं नृनदायिने नृनृनृ

इधर्मस्यसंधयस्यनखेववनिर्णयामित्वेनसंपूर्णत्वमहुलां ॥
 काकिस्वानःनखकायाडोमहुनसहायकाडोनावन ॥ ॥ उंशहूं श्रीमनवः
 असत्त्वगुनववनवनकमलायसंमहानावरासनकनायनमहूंनमस
 हुंनमानम ॥ रुक्माहंत्वांनमस्यामिउन्नथाथप्रसिधमे ॥ ॥ काकिहाऊ
 लपाडोमहुलसकिवनिना ॥ यस्यप्रसादकिनलोस्त्रुविनात्मनत्ववत्वप्रल

यनिकनःप्रहताधकावायः ॥ पम्भरुनाविलदरभेःसविलाभमूदेःनस्मेनम
 स्तुतिप्रियंशुनूरास्तवाया ॥ नमोवृद्धायशुनूव नमोधर्मायतावननमःसंधाय
 महप्रभनखाशनिशिपिसननंनमःसर्ववृद्धंनमस्यामिधर्मश्चजिनराषितं ॥ संधं
 वशीलसंपन्न ॥ नत्वप्रयंनमोमुन ॥ नत्वप्रयंमभनहंसर्वप्रतिदिमाप्रयं
 ॥ नूनमादरुगात्पूयंवृद्धवाक्षेदधमनः ॥ शवोक्षेभनधयामिवृद्धधर्म

द्रष्टुमर्हः॥ वाक्प्रेविहकनाम्पवस्वपनार्थप्रसिद्धयः॥ उत्पादयामिवनवा
 धिविहंनिमंदयामि नृहसर्वसत्त्वान्॥ ॐ हं च विष्णव न वा धिवा वि का वृक्ष
 हवे ३ हं जगती हिताय॥ दमनां सर्वपापानां पून्यानां चानूमादनां॥ कृतापवा
 मं च विष्णामि शर्या हं गपाषधं॥ मया बालेन मूर्धनयस्त्रिं वित्या पमागम
 नः॥ प्रकृष्यावयमावयप्रहृष्यावेशमेव न तदत्ययं दमया मेषनाथ

नामग्रनस्त्रिगः॥ कृतांजलिः ३ः वरिहः प्रसिद्धयः पुनः पुनः॥ नृत्थयंम
 त्ययं नैन प्रतिगृहं उनायकाः॥ नरुद्रकं मिदं नार्थं न कर्तुं यपूनमया॥ यथा
 नतथा गताया शर्या नृहं सस्य सं वृक्षहानेन वृक्षवक्रधा जान क्रियम्भ
 क्रिनत्कृमलमूलं यक्रानिकं यलिका यं यत्तु रावं यत्तु कृमं यथा धर्मनय
 संविद्यं नः कृमलमूलं॥ नित्यं मनूरायां सस्य सं वाक्प्रे नथा हं यत्रि ह

मिमं प्रविक्षमयामि॥ तथानुममानेन शमानकालं लीकस्य इः खंचसुखाः
 दयं च हर्षं कर्षं कर्षं सदा ह्युभकि सुमप्रकासं च यथेव हानोः॥ हृष्टं च ना
 नुस्मृतिभागा नावापृष्ट कथाया गमूपाग नावा॥ सर्वप्रकाशं जगता हिताय कुर्या
 म्यजुं सुखं संहिताया॥ ॥ ॐ श्रीः शिवमं प्रति हस्तु स्वाहा॥ ॥ बलिमलं खतया॥
 ततो यं का नेन वायुमधुलं नं का नेन नाग्निमधुलं नय मुक्कुरु स्वादितपत्रिपूलि

नं नयनि कुं शं किं खं हूं लो मां पां नां वं कालजा नप के म नप के प्रदियं पस्या॥ ॥
 बलिरुवना॥ ॥ ॐ शं हूं ॐ आदिमूद्रां यां दमय हूं॥ ॥ बलिसना हानि नयि
 या॥ ॥ ॐ ॐ आय स्वाहा॥ बलिसस्वानवाया॥ ॐ ममाय स्वाहा॥ वनू धाय स्वाहा॥ ॐ
 कृत्वाय स्वाहा॥ ॐ श्रमय स्वाहा॥ नेमय स्वाहा॥ ॐ वायुं स्वाहा॥ ॐ ॐ सानाय स्वा
 हा॥ ॐ उधं वृक्षं स्वाहा॥ ॐ सूर्यादियनय स्वाहा॥ ॐ नयानक्रयाधिपनय स्वाहा॥

ॐ अथ पिथित्य स्वाहा ॥ नागत्य स्वाहा ॥ ॐ यक्रत्य स्वाहा ॥ ॐ अस्नेत्य स्वाहा ॥ ॐ सर्वदि
 गदमदिगलाकयानेत्य स्वाहा ॥ ॥ वलिसुपंचयहानपूजायाय ॥ ॥ ॐ यक्रगंत्य स्वाहा
 सिक्क वक्रपूर्य्य स्वाहा ॥ वक्रधूप्य स्वाहा ॥ वक्रनेविश्र स्वाहा ॥ विद वक्रराजाय स्वाहा ॥ काकी
 वलिसविन्दुविय ॥ ॥ विप्रामं बुद्धवीवं दिवसकनधनानासिवागिन्द्रवरं मेरीयं वा
 नत्पं निहमरुवरुयं पचेमूर्तिपनंम् ॥ जाकिस्वान्नखकायाडीव निसहायक ॥

ॐ आदिवजिसहृदवसंधे समंचगुं दुवलिविदि स्वरुत्तक्रमनेवीनरूपनि
 श्वरायंप्रतिवायूधनाधिपतिश्च ॐ माधरुताधिपतिश्च देवा उधवद्राक
 पितामहश्च देवासमस्त रूपिजैवनागाधवाशुक्रगरक्षसमेतासपुत्ररावा
 सहस्रिरुसंधा ॐ देवैकमंसरुलंशगुं ॐ रुद्ररुद्रस्वाहा ॥ वलिसना
 ॥ जाकिस्वान्नखकायाहायक ॥ ॐ नमानत्तपयायवद्रवक्रयान

धर्मरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

II-173

धर्मरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

II-173

विष्णुदेवाः श्रीविष्णुदेवाः
विष्णुदेवाः श्रीविष्णुदेवाः
विष्णुदेवाः श्रीविष्णुदेवाः

यनममहावज्रकोशायदक्षकमरुववायत्रसिमूलपत्रमुपास्यगृहितरुः
 स्नायत्रमरुं कृधुनिश्वसवस्वाहिरुमिष्ठश्चरुनन्दरुशार्ङ्गश्चिष्टश्चयत्र
 सर्वविघ्नविनायकानाममहागधपमिक्तिविनाशकावाय ह्रूं ह्रूं ह्रूं ह्रूं स्वाहा ॥
 हानं वलि सं नी व न ग ॥ ग ॥ ह न ॥ पं ॥ य ह ॥ य प्र ॥ ज ॥ या य ॥ ॥ उ व ॥ ज गं ॥ ध स्वाहा सि च ॥
 पू ॥ ध स्वाहा ॥ व ॥ ज धू ॥ प स्वाहा ॥ व ॥ ज ने ॥ वि श स्वाहा ॥ ने ॥ वि ॥ द व ॥ ज वा ॥ ज ॥ य स्वाहा ॥

विष्णुकायाया ॥ हा हा हं कान ना देऊ पान वनाध ॥ ॥ व विस कि व निने ॥ ॥
 सा रा व मु द्रा सर्व धर्मानां सा रा व मु द्रा हं मु न्य तां हान व ऊ सा रा वा त म क हं
 ॥ ॥ मा न का ऊ य या या ॥ ॥ ऊ धर्मा ह दु प्र रा वा ह व न् न पान् न धा ग न ऊ गि नी
 न धु र् व वा दि म हा स म न हां ॥ ॥ ऊ य या ना गु ऊ कि दे व पू जा या वा ऊ म न्न
 या नाः को र वा या ॥ ॥ दे व ता या न पू जा या य स्ना न वि ध न यः सा धू यं प ती कृ स्वा हा

धू न य व ऊ द क हं स्वा हा स नान धा म गु ल व ऊ गं ख स्वा हा सि द्ध मि क व ऊ पू ष्यं प ति
 कृ स्वा हा स्ना न कृ या ॥ ॥ व ऊ ने वि द्य स्वा हा हा जा वा जा ने वि द्य म स नं का स म य कृ या
 वि न वि न स्त्र ना य स्वा हा धा ना कृ नि श रि वा सा व ऊ दि य प ति कृ स्वा हा म न वि य
 ऊ य ध र्माः या दि ना य ऊ का न मू र्ख ऊ कि र्वा ला प या का पू म ऊ धी कृ मा ल रू ना य स्वा हा
 ऊ कि पू जा ॥ ॥ उं सर्व ग हान सं हं ऊ ग द रू प सा द कं वि क्रा म नि व वि न रू तं धी म म लं
 ॥ ॥ व ऊ पु ष्प धि था दि पू जा ॥ ॥ ल स व न म धु ल धि नेः स्वा कृ स काल वा य ॥ व ऊ न र्क ना हं धी म नू त्या दि ॥

नमस्तु न्यायविस्वमहाज्ञानं सर्वमनिस्त्रिगुणकृत्या काधमस्तनूदधी संवलं
नमस्तु न्यायसंगानलाभीवज्रवा नाहिनद्रुमकिञ्चिन्नस्त्रिगुणकृत्या काधमस्तनूदधी संवलं
आद्विशिद्धिवनप्रदानवंकालं समासिलं सरुजानद्रुपिनिप्रसृष्टज्ञानमर्गधी
वज्रकाशितावि ॥ मुर्यायै देवाय नागसंरुवसंकासंप्रनागसमपरुसविफा
सा नथमानुर्यावज्रसूर्यापनमामिहं ॥ ७३ ॥ हाहाहं कालनादेकपालपना

धा॥ ॥ वलिमपूजायाया ॥ ॥ उँ वऊसत्त्वसमयमनूपावयवऊसत्त्वतभाप
निशादरुधामैरुवस्यकामैरुवस्यधामैरुवचनूवकामैरुवसर्वसि
धिमपूऊसर्वकर्मसविभविन्प्रीयंकुनूई हहहहहो हगवनसर्वत
थागतवऊमामयमचवजिरुवमहासमयसत्त्वध्या॥ ममएनिर्यकर्म
पूजासंपूर्णयांनऊऊमस्व॥ सिद्धकायाडाइनामवयाडाविसऊनयाया ॥ ॥

न

वलिखवना ॥ ॥ यंका न वायु मंदलं कं कात्र न विभु नाकारं
 आकाश वलिखव ॥ कूं आं जिं खिह ॥ नां मां पां तां वं काल जाग पंचो मृग
 पंच पुदि पनप ॥ अकाश न सिगलं ॥ ओं आ हं ॥ न इ सिना मृग मानि
 यन दे कलि नी वि गयत ॥ ॥ पून वलि आग्नाः पं लाघ म् ॥ ॥ वलि
 मं ॥ अग्ना नाग न सर्वे ह्य ह न नी वि द्ये सां नि क नि प्र कृ नि प्र ल

स्व न सर्व दू नास नि ०० मं वलि गृह २ म म सर्व सत्वा नां च न का
 कृ न पृथिवी कृ न न कृ २ मो हं २ रु ह स्वा हा ॥ ओं गा ना नि सर्व दू पृ
 यह न नि व तु न माल नि वा ना नि सर्व दू ह न न ग ध र्वा सृ ग कि न
 न म हा न ग म ध प ड व पु स म नि सर्व ह न पृ ग ज कृ ना कृ स ॥ अ क
 जा किं न्या दि ह य वि ध्यां सि नि प न कृ न कृ प्र मं य नं प्र दी नां प्र य

गविनासिनि ॥ एगवगिर्गना नानि आ गच्छ २ न्मं वलिग्र
 रु २ ममसक नहन २ ख २ खाहि २ सर्वबंधनयाधिनिग्रहानि
 नासिनि २ रुगखाहा ॥ ॥ ॥ अस्म मंगलविय ॥
 ऊ नमंगलं सकलसत्त्वद्विदिहि नस्यः सर्वात्ममकस्यव
 लधर्मा कृत्वाधिपस्य नि सखदोषनाहनस्य नमंगलं

वदुनपनमारिषका ॥ कलसः व्या ॥ १ ॥ ऊ नमंगलसकल
 सत्त्वदिहे ननस्य वृद्धस्य दीपलहि नस्यः विवृद्धवृद्ध ४९
 दोगसन्निविनस्यः एतमकस्यः नमं एवदुनपनमा
 रिषका ॥ सिनु ॥ २ ॥ ऊ नमंगलंः उ जननासन्निविनस्य
 धर्मस्य ननकोथिनस्यः निनृकस्यः लाकप्रियं प्रविनस्य
 निनात्मकस्यः नमंगलं एवदुनपनमारिषका ॥ सिनु ॥ ३

२७
अत्मगलं वज्रसत्त्ववज्रधर्मः सकर्मवर्जिमुद्रांगन
नसहिगस्याविवृद्धकस्यर्वलाजनस्यरुवद्वृषविनासक
स्यः नमंगलं रुवतुनं अन्तिकं जंगवाद्य ४॥ ॥ ४॥ श्रीव
ज्रज्ज वज्रयज्ञः सर्वजपाणि सपाहिनावसहिगस्य अमाद्यसि
धियः नमंगलं रुवतुनं अन्तिकं जंगवाद्य ४॥ ॥ ४॥ श्रीव
ज्रज्ज वज्रयज्ञः सर्वजपाणि सपाहिनावसहिगस्य अमाद्यसि
धियः नमंगलं रुवतुनं अन्तिकं जंगवाद्य ४॥ ॥ ४॥ श्रीव
ज्रज्ज वज्रयज्ञः सर्वजपाणि सपाहिनावसहिगस्य अमाद्यसि
धियः नमंगलं रुवतुनं अन्तिकं जंगवाद्य ४॥ ॥ ४॥ श्रीव

२८
प्रहृदस्य धर्मकं तु नाव वज्रहा सञ्जुलपि न भुजित्व संत
वर्जिनस्य निविधि नस्य नमंगलं रुवतुनं ॥ ४॥ ॥ ४॥ श्रीव
ज्रज्ज वज्रयज्ञः सर्वजपाणि सपाहिनावसहिगस्य अमाद्यसि
धियः नमंगलं रुवतुनं अन्तिकं जंगवाद्य ४॥ ॥ ४॥ श्रीव
ज्रज्ज वज्रयज्ञः सर्वजपाणि सपाहिनावसहिगस्य अमाद्यसि
धियः नमंगलं रुवतुनं अन्तिकं जंगवाद्य ४॥ ॥ ४॥ श्रीव
ज्रज्ज वज्रयज्ञः सर्वजपाणि सपाहिनावसहिगस्य अमाद्यसि
धियः नमंगलं रुवतुनं अन्तिकं जंगवाद्य ४॥ ॥ ४॥ श्रीव

२६

पूजाहि न प्रगिस मं विमल प्रगीतं तं संगलं रु वरु न य गमा
रिषक ४॥ जाकं ॥ ८ ॥ ॐ ति अष्टमंगल गम थाः ॥ ॐ ॥

३०

अश्वनिष्ठा कर्म माह ॥ ॥ द्वापानि सत्ता कायः पा ३॥ दी स्वाहा ॥
शुभपूजा रुधिय ॥ न्या स्या य ॥ पुन नमस्कात्र या य ॥ नत्न मधुल दाहल
पा ॥ ध्यान या य ॥ सर्व पूजा या य ॥ अविश्रव या य ॥ न सत्ता का य ॥ ॥
पूजा रु से क न्य या य ॥ पुन मधुल दन ॥ धुन श स ता इ न वान ॥ विसर्ज
न या य ॥ ॥ ॥ ॥
जप पूजा ॥ धूलि धून श सत्ता हि स म नु वा य ॥ जा कि प्र व न य ॥ ॥

न्यानुगनायादि॥ इन्द्रादिवकीयादि॥ लि॥ उं आहं हाः यं कचि
 दिह ॥ नंदवदानवगंधुवयजनाजसमहानगमनुष्यामनुष्यप्रेतपि
 भवः अकिनिमात्रिग्रहगंधप्रसालकासर्वहृत्तगंधावल्गुगंधाचन
 सर्वः इन्द्रवलिपृष्ठं उं ममसपनिवानस्यः सान्निध्याद्विज्ञावननगुफिक्रवैउ
 उं आहं कजधनआहापयनि॥ सर्वहृत्तवलि॥ ॥
 उवजमहाकालाये॥ ॥ उं माहांकालायसमानापकालिननधाययिमका
 लायः इन्द्रवलिपृष्ठं याय॥ कालिनदिनप्रतिहासलः श्रीनदां इवलिगृह
 रव २ स्वाहि २ सर्वहृत्त सत्वनामानव २ वृह २ वंभ २ हन २ दह २ पच २ दिन

म २ केन मालय २ हं २ दाम २ स्वाहा॥ ॥ महांकालवलि॥ ॥
 उं आहं लाहकालायः मृगचन्द्रसूर्यमंगलवृहवृषपिशुक्रमनिधन
 नाहकं तुहसवलिवालहः इन्द्रमद्यचमनियः पुष्यधूपवलिचदासामि
 सपित्यागृह्णतुहं तुपिवं तुहं कृत्वादानपते सर्वसत्वानांच श्रवश्च मया
 गः सान्निध्याद्विज्ञावननगुफिक्रवैउ ॥ ॥
 ग्रहवलि॥ ॥ उं आहं हाः वनदकीकृमग्वमुखः उरूकमुखः ॥
 ह्रस्वमुखः काकमुखः गृध्रमुखः व्याधुमुखः गरुडमुखः ए १ की १ मयया

५ आचमनियः पुष्पधूपवलीचदास्थामि सपित्या गृह्णन्तु पितृवन्तु हनन्तु
 जमानस्य चावृष्य माता गन्धं अग्निं पूज्य गृह्णन्ति प्रणिच ददध्वं सर्वदा २
 रुद्र ३ वज्र ४ न आहोपयनि स्वाहा ॥ ॥ एतवलि ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाः ॥ महासाहस्रपमादनिः महामायुनिः महासिद्धिनिः महाम
 चन्द्रसादनिः वृद्धधैवमाहामात्रो विशाद व्यामहावलाः मामकिंचैव गालाः दे
 विनथा कृतिवज्रभृत्वनयसानामहाधनान्धेवचैः महाकालाचदुह्येचै
 वज्रइत्येनैः पता ॥ सुपासितवज्रपाणिमहावलाः वज्रमालोमाहा
 विद्यानैः धैवामृतकंदलि ॥ अथनाजिनामहादेविकालधर्मो महावलाः

नथाधन्यामहालग्नपद्मकंदलि नमो वृद्धपूषावलि मधि चूडासावधुर्क
 रिचः ननामहागजानथादेविधन्यासवियुमालि निलाकृतिवज्रनाचै
 ववृद्धक्रितिकनायका ॥ कापालिनिमाहालग्नधन्यालकिस्वनिस्तथा
 अन्पाचवहपाविद्यासुखनृगृहाकालिका ॥ अकालिकलानिकृणहि सि
 त्रिनिकमलाकृताः हानिनिहलिकसिचषामनिहलिपिगलेः लघपन
 कालपानः कानाकनसाहनियमइति नमलाकृति उग्रहेनिपनिदुःखम
 गन्धयूषधूपदिपवलिचदास्थामि न ३ २ मां दानपेक्षितं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
 स्वाहा ॥ पंचनखावलि ॥